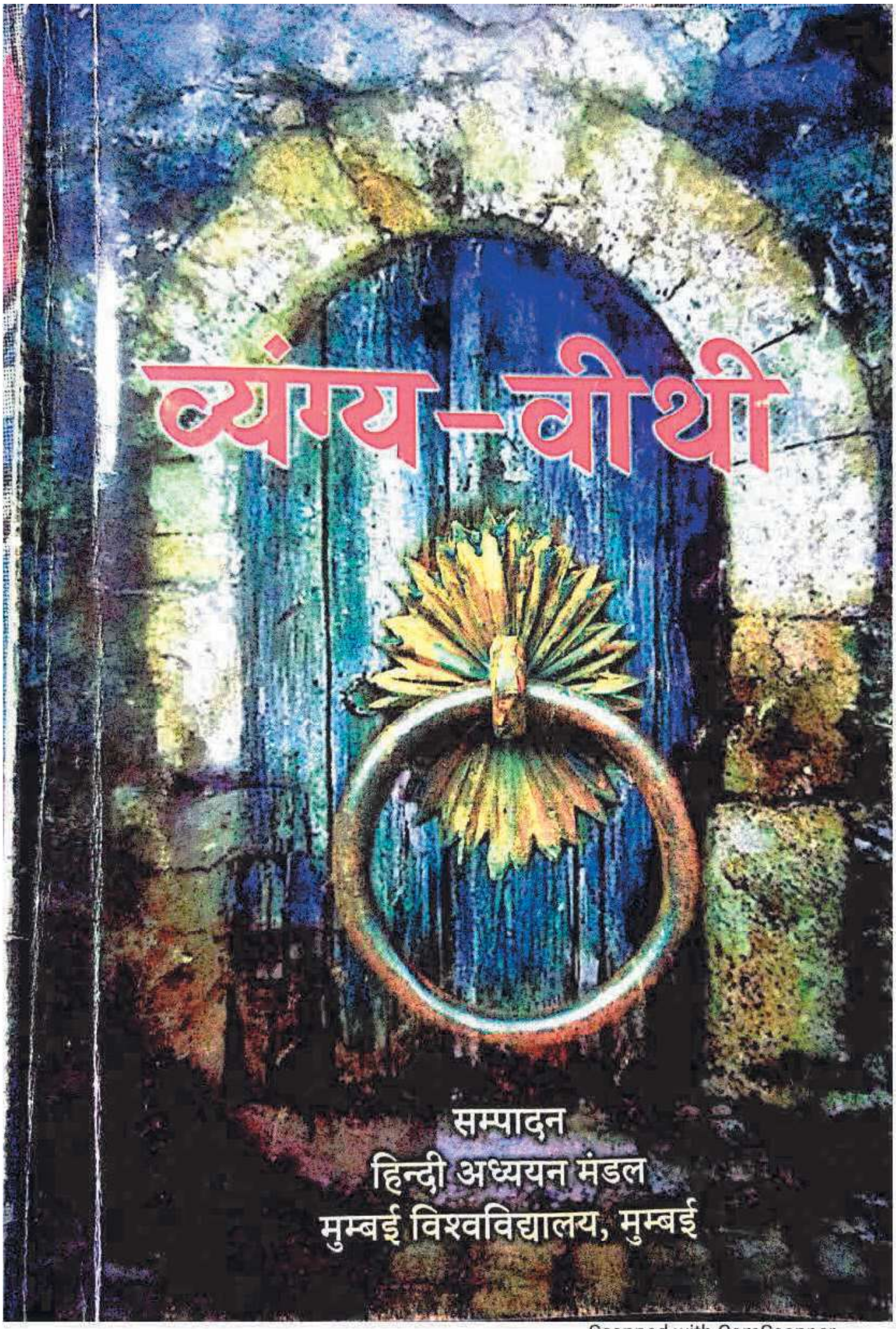


Scanned with CamScanner

## हिन्दी अध्ययन मण्डल
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई

डॉ. अनिल सिंह (अध्यक्ष )
डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय (सदस्य)
डॉ. हूबनाथ पाण्डेय (सदस्य)
डॉ. विद्या शिंदे (सदस्य)
डॉ. शीला आहुजा (सदस्य)
डॉ. चित्रा गोस्वामी (सदस्य)
डॉ. संतोष मोटवानी (सदस्य)
डॉ. प्रकाश धुमाल (सदस्य)
डॉ. गौतम सोनकांबले (सदस्य)
डॉ. मोहसिन ख़ान (सदस्य)

Scanned with CamScanner

# व्यंग्य-वीथी

सम्पादक
डॉ. अनिल सिंह

सह-सम्पादक
डॉ. मोहसिन ख़ान

सम्पादक मण्डल
डॉ. उमेशचन्द्र शुक्ल
डॉ. एम.एच. सिद्दीक़ी
डॉ. अशोक ए. सालुंखे
प्रा. बालासाहेब गुंजाल
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट

साधनकुञ्ज प्रकाशन

Scanned with CamScanner

# क्रम


| | |
|---|---|
| *आमुख* | *7* |
| **भगवतीचरण वर्मा** | **11** |
| वसीयत | 13 |
| **हरिशंकर परसाई** | **26** |
| सुदामा के चावल | 28 |
| **शंकर पुणतांबेकर** | **35** |
| एक लाख | 37 |
| **डॉ. नामवर सिंह** | **40** |
| बापू की विरासत | 42 |
| **शरद जोशी** | **46** |
| बंसीवाले का पुजारी | 48 |
| **घनश्याम अग्रवाल** | **51** |
| वाह रे! हमदर्द | 52 |
| **डॉ. सूर्यबाला** | **55** |
| प्रभुजी, तुम डॉलर हम पानी | 56 |
| **डॉ. स्नेहलता पाठक** | **60** |
| छूकर चरण भाग्य बनते हैं | 62 |
| **प्रेम जनमेजय** | **66** |
| कन्या रत्न का दर्द | 68 |


Scanned with CamScanner

# शकुंतिका

## सृजन और दृष्टि

सम्पादक

डॉ. अनिल सिंह

# शकुंतिका

## सृजन और दृष्टि

सम्पादक

डॉ. अनिल सिंह

लोकभारती प्रकाशन

**लोकभारती प्रकाशन**
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग
प्रयागराज-211 001
वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com
ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com
**शाखाएँ :** 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने
पटना-800 006
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

**पहला संस्करण :** 2021 | **मूल्य :** ₹695

© लेखक/सम्पादक

**बी.के. ऑफसेट**
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
द्वारा मुद्रित

SHAKUNTIKA : SRIJAN AUR DRISHTI
*Edited by* Dr. Anil Singh

ISBN : 978-81-948335-7-4

# क्रम


*भूमिका* 11
*पुरोवाक्* 15
*जीवन की पहचान* 19

खंड-1
**बदलते परिप्रेक्ष्य में परिवार और समाज**

शकुंतिका : सामाजिक और पारिवारिक यथार्थ का दस्तावेज़ — *डॉ. मोहसिन ख़ान* 25
शकुंतिका : विश्वास की परम्परा का निर्माण — *डॉ. मनीष कुमार* 32
'शकुंतिका' उपन्यास में वर्णित समाज और समस्याएँ — *डॉ. अनिल सिंह* 36
नज़रिया बदलने की प्रेरणा देनेवाला उपन्यास : शकुंतिका — *डॉ. मधु खराटे* 43
सामाजिक आग्रह-दुराग्रह और शकुंतिका — *डॉ. पी. राधिका* 48
स्त्री जीवन का समसामयिक सन्दर्भ — *डॉ. उषा मिश्रा* 52
'शकुंतिका' उपन्यास में चरित्र-सृष्टि — *प्रा. अनन्त द्विवेदी* 59
समाज के बदलते सन्दर्भ और शकुंतिका — *डॉ. कुबेर कुमावत* 71
'शकुंतिका' उपन्यास में मानवीय रिश्तों और संवेदनाओं का अंकन — *सुशील कुमार 'आजाद'* 79
'शकुंतिका' उपन्यास में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याएँ — *अर्चना यादव* 82

खंड-2
**नारी अस्मिता, जीवन और मानव-मूल्य**

बदलते मूल्यों के सन्दर्भ और शकुंतिका — *डॉ. कल्पना राजेन्द्र पाटील* 89
नारी अस्मिता की पहचान : 'शकुंतिका' — *डॉ. विजयश्री* 94
शकुंतिका : नारी के प्रति नया दृष्टिकोण — *डॉ. गिरीश काशिद* 99

# शकुंतिका : सामाजिक और पारिवारिक यथार्थ का दस्तावेज़

**डॉ. मोहसिन ख़ान**
हिन्दी विभागाध्यक्ष जे.एस.एम. कॉलेज, अलीबाग, महाराष्ट्र

हिन्दी के समकालीन सशक्त रचनाकार भगवानदास मोरवाल ने अबतक चार कहानी-संग्रह और लगभग आठ उपन्यासों की रचना की है। काला पहाड़, हलाला, वंचना, रेत, बाबल तेरा देस में, सुर बंजारन इत्यादि उपन्यास तो अपनी अनूठी विषय-रचना के कारण चर्चा में थे ही, परन्तु अब उनका लघु उपन्यास 'शकुंतिका' राजकमल से सद्य:प्रकाशित हुआ है; जो कि एक प्रासंगिक कथा और सामाजिक समस्या को अपने भीतर सँजोए हुए है। कथा मात्र प्रासंगिक ही नहीं, बल्कि हमारे समय के समाज की एक बड़ी भयानक समस्या और त्रासदी को दर्शाती है, वह है—लैंगिक भेदभाव। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पौरुष वर्चस्व और पितृसत्तात्मक व्यवस्था का प्रारम्भ से चलन रहा है। कुछ जनजातीय समुदायों को छोड़कर देश के सामाजिक स्वरूप में हम पितृ-सत्ता का ही अंकुश देख रहे हैं। इस कारण स्त्री की प्रतिभा कुंठित होती चली गई तथा स्त्रियों को वे अवसर न मिल पाए जिसमें वे अपने जीवन में कुछ निर्णय करते हुए अपने अधिकारों को सुरक्षित रख सकें।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने जहाँ लैंगिक भेदभाव को समाज में बढ़ाया है, वहीं स्त्रियों की दशा और भी दीन-हीन होती चली गई है। इसकी एक सबसे भयानक त्रासदी कन्या-भ्रूण हत्या हमारे समाज में निरन्तर एक समस्या बनकर उभरी है, जिससे अब तक निजात नहीं मिल पाई है। चाहे सामाजिक परिवर्तन के नाम पर हो रहे आन्दोलन हों या कानून द्वारा दंडित करने का भय, लेकिन भारतीय समाज अपनी जड़-व्यवस्था को, सड़ी-गली रूढ़ि को अब तक ढोता चला आ रहा है और लैंगिक भेदभाव का सामना आज सामाजिक स्तर पर कई श्रेणियों में किया जा रहा है। शकुंतिका ऐसे ही सामाजिक भेदभाव और लैंगिक असमानता को दर्शानेवाला एक कथा-प्रधान उपन्यास है, जिसमें दो परिवारों की कथा के माध्यम से लेखक ने लड़कियों के जीवन को सकारात्मक, उन्मुक्त रूप में दर्शाते हुए, सामाजिक विकास

'स्वयंप्रभा'
मूल्यांकन के नये आयाम
संपादक
डॉ. अनिल सिंह

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

**I.S.B.N. : 978-93-90265-07-7**

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | 'स्वयंप्रभा' मूल्यांकन के नये आयाम |
| सम्पादक | : | डॉ. अनिल सिंह |
| प्रकाशक | : | अमन प्रकाशन<br>104-A/80-C रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.)<br>मो. : 08090453647, 9044344050<br>ऑफिस : 0512-3590496 |
| संस्करण | : | प्रथम सन् 2020 |
| सर्वाधिकार | : | सम्पादकाधीन |
| मूल्य | : | ₹ 550.00 मात्र |
| मुद्रक | : | साक्षी ऑफसेट, यशोदानगर, कानपुर |
| शब्द सज्जा | : | अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर |

**SWYAMPRABHA MULYANKAN KE NAYE AAYAM**
**Edited by : *Dr. Anil Singh***
***Price : Rs. Five Hundred Fifty Only***

- चरित्र सृष्टि की दृष्टि से 'स्वयंप्रभा' का मूल्यांकन – डॉ. राकेश शुक्ल 114
- 'स्वयंप्रभा' खंडकाव्य की चरित्र सृष्टि – डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल 121
- तपोवनवासिनी स्वयंप्रभा वाया उद्भ्रांत – डॉ. ऋषिकेश मिश्र 125
- तपस्विनी स्वयंप्रभा और अन्य चरित्र – डॉ. संतोष मोटवानी 150
- 'स्वयंप्रभा' खंडकाव्य के आधार पर कंडु ऋषि, अंगद और जटायु का चरित्र-चित्रण – डॉ. उर्मिला सिंह 160
- स्वयंप्रभा : संवेदना के विविध रंग – डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 165
- उद्भ्रांत कृत स्वयंप्रभा काव्य में हनुमान एवं स्वयंप्रभा का संवाद – डॉ. रमा सिंह 169
- प्रकृति, पर्यावरण और स्वयंप्रभा – श्री रणजीत कुमार झा 175
- स्वयंप्रभा : प्रकृति और मानव का अनंत सम्बन्ध – डॉ. एम. एच. सिद्दीकी 183
- 'स्वयंप्रभा' का काव्य सौष्ठव – डॉ. प्रमिला अवस्थी 187
- स्वयंप्रभा : वस्तु, शिल्प एवं शैली का अभिनव प्रयोग – डॉ. विजय कुमार 'संदेश' 195
- स्वयंप्रभा : खंडकाव्य का वैशिष्ट्य –डॉ. मोहसिन खान 202
- 'स्वयंप्रभा' खंडकाव्य : उद्देश्य और शीर्षक की सार्थकता – डॉ. अनिल सिंह 210
- कवि उद्भ्रांत की 'स्वयंप्रभा' का विश्लेषण – डॉ. महात्मा पांडेय 217
- कई-कई कविताओं की है यह अनुभूति – दुर्गावती सिंह 226
- 'स्वयंप्रभा' : रामप्रेरित महाकाव्यों में बड़ी उपलब्धि – डॉ. गंगादत्त शास्त्री 'विनोद' 228
- पुराण को वर्तमान से जोड़ने वाला काव्य – रामशिरोमणि शुक्ल 237
- जीवन और संघर्ष का मणिकांचन संयोग – जनार्दन मिश्र 239

# स्वयंप्रभा : खंडकाव्य का वैशिष्ट्य

• डॉ. मोहसिन खान
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जे.एस.एम. कॉलेज,
अलीबाग, महाराष्ट्र

समकालीन हिंदी रचनाकारों में रमाकांत शर्मा 'उद्भ्रांत' जी एक ऐसे ऊर्जावान रचनाकार हैं जो अपने लेखन प्रारंभिक दौर से लेकर अब तक निरंतर रचनात्मकता में ऊर्जा के साथ संलग्न हैं, सेवक हैं। अपने लंबे लेखकीय अवधि में उन्होंने लगभग आठ दर्जन से अधिक विभिन्न विधाओं से संबंधित रचनाओं, पुस्तकों की रचना की है। उनका रचना संसार उनकी अक्षय ऊर्जा, गहन-गंभीरता, रचनात्मक दायित्व तथा साहित्य के प्रति सेवा भाव को हमारे समक्ष लाता है। उनकी दीर्घ अवधि की साहित्यिक सेवा ने उन्हें विशिष्ट रचनाकार होने का सौभाग्य दिया है। वे निरंतर साहित्य के व्यापक परिक्षेत्र में सक्रिय नजर आते हैं और हर समय नए से नए विषयों को नए से नए रूप में प्रस्तुत करने की भरसक कोशिश करते रहते हैं। उनकी साहित्यिक कृतियाँ अन्य साहित्यकारों के लिए भी प्रेरणा का केंद्र हैं। समकालीन रचनाकारों के मध्य वे बिना किसी एप्रोच के अपने आप को स्थापित करते हैं। उनकी स्थापना का मूल कारण गुणवत्ता-युक्त साहित्य की रचना करना रहा है और निरंतर लेखन-पठन में सक्रिय रहना रहा है। स्वभाव से भी जितने विनम्र, ईमानदार और प्रगतिशील विचारधारा के व्यक्ति हैं; उतने ही वे अपने कृतित्व में भी नजर आते हैं। जिस तरह की अंतर-चेतना उद्भ्रांत जी अपने भीतर रखते हैं, वह समस्त अंतर-चेतना अभिव्यक्ति के माध्यम से उनकी रचनाओं में सहजता से देखी जा सकती है। कहने का आशय यह है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व और रचना की रचनात्मकता दोनों की एकात्मता का संयोजन हमें एक साथ उनमें देखने को मिलता है। यही उनकी एक महत्वपूर्ण विशेषता कही जा सकती है जो आजकल कम ही रचनाकारों में उपस्थित है।

उद्भ्रांत जी की कृति खंड-काव्य 'स्वयंप्रभा' एक विशिष्ट खंडकाव्य है जो बावजूद पुराकथा पर आधारित होने पर भी अपने समय के सापेक्ष में प्रासंगिकता से रचा गया है। भले ही इसकी संपूर्ण कथा पुराख्यान पर आधारित हो, परंतु पुराख्यान किस प्रकार से नवीनता के साथ समकालीनता के साथ बांधा जा सकता



है, आज के इस दौर में उद्भ्रांत जी ने इस कृति के माध्यम से दर्शा दिया है। चाहे पुराख्यान और उनके चरित्र कितने ही पुराने हों, लेकिन उन्हें वर्तमान समय में कैसे प्रासंगिक बनाया जा सकता है और किसी कृति को किस प्रकार अपनी समकालीन बोध-चेतना के द्वारा रचा जा सकता है ये इस कृति ने उदाहरण प्रस्तुत किया है। आज के समय में जहां समकालीनता के क्षेत्र में पुराख्यान पर बहुत अधिक आधारित रचनाएं अपनी श्रेष्ठता के साथ प्रस्तुत नहीं हो रही है, वहीं उनका यह खंडकाव्य पुराख्यान के साथ नवीनता का समावेश करते हुए अपनी विशिष्टता को प्रदर्शित करता है। स्वयंप्रभा का संपूर्ण पाठ अपने आप में अत्यंत प्रभावकारी, प्रेरणास्पद, नवीनता से संयुक्त और मौलिकता से भरा हुआ है, जिसके कारण यह काव्य आज के समय में अपना वैशिष्ट्यदर्शा देता है। स्वयंप्रभा को किसी एक निश्चित सांचे में बांधकर उसकी व्याख्या, विश्लेषण, आलोचना, समीक्षा करना वास्तव में खंडकाव्य के लिए गला घोंटने के बराबर होगा। इस खंडकाव्य में जिस तरह की कथा को ग्रहण किया गया है; उससे इस खंडकाव्य की कई विशेषताएं सामने उभर कर आती हैं। इस खंडकाव्य को केवल एक दृष्टि से नहीं आका जा सकता है, बल्कि यह खंडकाव्य अपने भीतर कई-कई दृष्टियाँ सँजोए हुए है और इस खंडकाव्य को विभिन्न दृष्टिकोण से अपनी विशिष्टता के साथ देखा जाएगा तब ही इसके विभिन्न आयाम सब ओर सबके लिए अपनी सार्थकता में उपलब्ध हो सकेंगे। स्वयंप्रभा अपने भीतर कई विशिष्ट बांधे हुए है, इन विशेषताओं को स्पष्ट करना और उसका विश्लेषण करना स्वयंप्रभा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाएगा। इसका कारण यह है कि यह अपनी बनावट में एकदम नया होने के साथ-साथ शिल्प के तौर पर भी कुछ नए प्रयोग इसमें किए गए हैं जिनका उल्लेख करना आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य सा जान पड़ता है।

### 1. खंडकाव्य के नियमों के अनुरूप-

उद्भ्रांत जी की कृति स्वयंप्रभा एक खंडकाव्य है। इसे मात्र खंडकाव्य कह देने से पूर्तिभर कर देने का आशय नहीं है, बल्कि स्वयंप्रभा कृति खंडकाव्य के नियमों पर बराबर खरी उतरती है। जब रचनाकार ने इसको आकार देना प्रारंभ किया तो उनकी दृष्टि में इसे खंडकाव्य के रूप में रचना करना उद्देश्य रहा था। इसी दृष्टि को केंद्रित करके उन्होंने इसे खंडकाव्य का रूप दिया। खंडकाव्य के नियम के अनुसार खंडकाव्य में एक प्रमुख कथा का होना अनिवार्य है। विभिन्न चरित्रों का सृजन होना अनिवार्य है, भले ही वे चरित्र विस्तार से न लिए गए हों, लेकिन चरित्रों का विशिष्ट होना अनिवार्य है। अलग-अलग अंतर्कथाएँ और प्रासंगिक कथाओं का भी समायोजन होना चाहिए। एक विशेष प्रकार का उद्देश्य इसमें होना चाहिए। परिवेश, समय और वातावरण का भली प्रकार से संयोजन होना चाहिए।

# मध्यकालीन और आधुनिक काव्य

हिन्दी अध्ययन मंडल
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

# मध्यकालीन और आधुनिक काव्य

संपादक
डॉ. अनिल सिंह

सह-संपादक
डॉ. मोहसिन ख़ान

संपादक मण्डल
डॉ. उमेश चन्द्र शुक्ल
डॉ. एम. एच. सिद्दीक़ी
डॉ. अशोक ए. सालुंखे
प्रा. बालासाहेब पी. गुंजाल
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट

राजपाल

स्थापित 1912
100 वर्षों की श्रेष्ठ प्रकाशन परम्परा
राजपाल

₹ 50
ISBN : 9789389373417
प्रथम संस्करण : 2020 © हिन्दी अध्ययन मंडल मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
MADHYKALEEN AUR AADHUNIK KAVYA (Poetry)
Edited by Hindi Adhyayan Mandal
Mumbai Vishwavidyalaya, Mumbai
मुद्रक : जी.एस. ऑफसेट दिल्ली

**राजपाल एण्ड सन्ज़**
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006
फोन : 011-23869812, 23865483, 23867791
e-mail : sales@rajpalpublishing.com
www.rajpalpublishing.com
www.facebook.com/rajpalandsons

क्रम


प्राक्कथन 7

**मध्यकालीन काव्य** 11

कबीरदास : कबीर के दोहे 13

सूरदास : सूरदास के पद 16

तुलसीदास : तुलसीदास के पद 19

मीराँबाई : मीराँबाई के पद 23

रहीम : रहीम के दोहे 26

बिहारी : बिहारी के दोहे 30

**आधुनिक काव्य** 33

मैथिलीशरण गुप्त : मनुष्यता 35

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : वह तोड़ती पत्थर 39

सोहनलाल द्विवेदी : कोशिश करने वालों की हार नहीं होती 43

हरिवंशराय 'बच्चन' : जो बीत गई सो बात गई 45

रामावतार त्यागी : अपना अहम् नहीं बेचूंगा 49

दिनकर सोनवलकर : शीशे और पत्थर का गणित 53

दुष्यंत कुमार : आज सड़कों पर लिखे हैं 59

चंद्रकांत देवताले : माँ पर नहीं लिख सकता कविता 62

राजेश जोशी : विकल्प 65

ओमप्रकाश वाल्मीकि : एक और युद्ध 68

अरुण कमल : नए इलाके में 73

निर्मला पुतुल : उतनी दूर मत ब्याहना बाबा! 76

**शब्दार्थ** 81

# जनता शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित
# कै. नानासाहेब कुंटे शैक्षणिक संकुल

श्रीमती इंदिराबाई जी. कुलकर्णी कला, जे. बी. सावंत विज्ञान एवं
सौ. जानकीबाई धोंडो कुंटे वाणिज्य महाविद्यालय, अलिबाग-रायगड (महाराष्ट्र)
मुंबई विश्वविद्यालय से स्थायी रूप से संलग्न
रा. मू. प्र. प. द्वारा पुनर्मान्यता 'ब' श्रेणी (तृतीय चक्र)
आंतरिक गुणवत्ता निर्धारक प्रकोष्ठ (IQAC)
एवं हिंदी, मराठी, अंग्रेज़ी विभाग के तत्वावधान में

**भारतीय भाषा, साहित्य व संस्कृति : भूमंडलीकरण के संदर्भ में**
**भारतीय भाषा, साहित्य व संस्कृती : जागतिकीकरणाच्या संदर्भात**

विषय पर आयोजित एक दिवसीय अंतरभाषाई राष्ट्रीय स्तर परिसंवाद-शोध पुस्तक

(मंगलवार, ०५ मार्च २०१९)

**NCIL 2019 Proceedings**

ISBN 978-81-940661-1-8

प्राचार्य
जे. एस. एम. महाविद्यालय, अलिबाग-रायगड (महाराष्ट्र)

# PUBLICATION DETAILS

ISBN 978-81-940661-1-8

- Place of Publication : Janata Shikshan Mandal's Smt. Indirabai G. Kulkarni Arts College, J.B. Sawant Science College and Sau. Janakibai Dhondo Kunte Commerce College, Alibag-Raigad (M.S.)
- Chief Editor : Principal Dr. Anil K. Patil
- Editor : Dr. Mohsin Khan
- Co-Editor : Prof. Nilkanth Shere & Asst. Prof. Jayesh Mhatre
- Edition : First, 2020, ISBN : 978-81-940661-1-8
- Address : J. S. M. College, Behind SBI Bank, Court Road, Raigad, Alibag, Maharashtra 402201
- Owner/© : Principal J. S. M. College, Alibag.
- Cover Page Design : From Net

Publisher and Editor take no responsibilities for the inaccurate, misleading data, opinion and statements appeared in the articles published in this book.

All responsibilities of the contents rest upon the authors.

**PRINT BY**

**Janata Shikshan Mandal's**

Smt. Indirabai G. Kulkarni Arts College, J.B. Sawant Science College and Sau. Janakibai Dhondo Kunte Commerce College.

Behind SBI Bank, Court Road, Alibag- Raigad, Maharashtra, Pin-402201

E-mail: principal_jsm@rediffmail.com Website: www.jsmalibag.edu

# भारतीय भाषा, साहित्य व संस्कृति : भूमंडलीकरण के संदर्भ में
# भारतीय भाषा, साहित्य व संस्कृती : जागतिकीकरणाच्या संदर्भात

शुभशंसा संदेश

सम्पादकीय


| क्र. | शीर्षक | लेखक | पृ. क्र. |
|---|---|---|---|
| 1. | भूमंडलीकरण : सामयिक साहित्य अंतर्प्रभाव एवं रूप परिवर्तन | डॉ. मोहसिन ख़ान | 9 |
| 2. | भूमंडलीकरण और हाशिए पर खड़ा किन्नर समाज | स्नेहलता स. पुजारी | 28 |
| 3. | भूमंडलीकरण और स्त्री विमर्श | निरूपा उपाध्याय | 35 |
| 4. | भूमंडलीकरण और परिवेश चिंतन | नरेंद्र विजय पाटील | 38 |
| 5. | भूमंडलीकरण और स्त्री विमर्श के संदर्भ में हिन्दी साहित्य में नारी लेखन | डॉ. मोहिनी नेवासकर | 44 |
| 6. | हिन्दी भाषा और भूमंडलीकरण | मनोज कुमार | 47 |
| 7. | भूमंडलीकरण का प्रभाव तथा इक्कीसवीं सदी की कवयित्रियों की कविता में स्त्री | भाईदास रघुनाथ पाटील | 49 |
| 8. | भूमंडलीकरण और हिन्दी भाषा | डॉ. नारायण बागुल | 52 |
| 9. | भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' डॉ. काशीनाथ सिंह के उपन्यास के संदर्भ में | डॉ. मेदिनी शशिकांत अंजनीकर | 55 |
| 10. | भूमंडलीकरण का हिन्दी उपन्यास पर प्रभाव | आमलापुरे सूर्यकांत | 58 |
| 11. | जागतिकीकरण आणि मराठी महानगरीय कविता | बी. एम. नन्नवरे | 61 |
| 12. | जागतिकीकरण आणि मराठी स्त्रीवादी साहित्य | रूपाली अशोक कांबळे | 67 |
| 13. | जागतिकीकरणाचा विज्ञान साहित्यावरील परिणाम | प्रिया मंदार नेरलेकर | 71 |
| 14. | जागतिकीकरणात लोककलांचे वेगळेपण | डॉ. गोकुळ शिखरे | 78 |
| 15. | जागतिकीकरण आणि शेषराव पिराजी धांडे यांची कविता | ज्ञानोबा कांबळे | 84 |
| 16. | जागतिकीकरण आणि आगरी कविता | प्रा. नम्रता नि. पाटील | 90 |
| 17. | 'ग्लोबलच्या गावकूसा' मधील बाजारसंस्कृतीचे दर्शन : एक अभ्यास | प्रा. हत्तीअंबिरे प्रदिपकुमार मारोती | 97 |
| 18. | जागतिकीकरण आणि ग्रामीण मराठी साहित्य | डॉ. ओमकार वि. पोटे | 101 |
| 19. | जागतिकीकरण आणि मराठी भाषा | संदिप भागु चपटे | 105 |
| 20. | जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण साहित्य | डॉ. राखी सलगर | 109 |
| 21. | मराठी ग्रामीण कादंबरीवरील जागतिकीकरणाचा प्रभाव | ज्ञानेश्वर किसन म्हात्रे | 112 |
| 22. | जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण कादंबरी | सतीश वि. सावळे | 115 |
| 23. | जागतिकीकरण आणि मराठी भाषा प्रसारमाध्यमांच्या : संदर्भात | जयेश म्हात्रे | 118 |




ISBN 978-81-940661-1-8

J. S. M. College, Alibag-Raigad (M.S.) 402 201

# भूमंडलीकरण : सामयिक साहित्य अंतर्प्रभाव एवं रूप परिवर्तन

**डॉ. मोहसिन ख़ान**

*स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष*
*एवं शोध निर्देशक*
*जे. एस. एम. महाविद्यालय,*
*अलीबाग-402 201*
*जिला-रायगढ़-महाराष्ट्र*
*ई-मेल- khanhind01@gmail.com*
*मोबाइल-09860657970*

भूमंडलीकरण अमेरिका का प्रतिनिधि है और अपने पैर पसारता हुआ पूरे एशिया में छा गया, यूरोप तो उसकी गिरफ्त में पहले ही आ चुका था। इस भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण में जहां वस्तुवादी दृष्टिकोण को महत्व दिया है, वहीं वह एक भयानक संकट और खतरा बनकर हमारे सामने गहराता जा रहा है ऐसा, कई विचारकों द्वारा अभिहीत निरंतर होता जा रहा है। भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण एक नई सभ्यता लेकर सामने लाता है, लेकिन इस नई संकल्पना ने अपने नकारात्मक प्रभावों को अधिक दर्शाया है, जिसमें किसी एक राष्ट्र की प्रभुसत्ता और नियत भी हमें साफ नजर आती है। इस संबंध में पुष्पपाल सिंह अपनी पुस्तक 'भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास' के पूर्व कथन में लिखते हैं- "भूमंडलीकरण सामान्यत: एक ऐसी अवधारणा होनी चाहिए थी कि पूरे विश्व में एक संस्कृति विकसित हो जो पूरे भूमंडल को एक विश्वग्राम में परिवर्तित कर सारी दुनिया के मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होती। इस रूप में यह हमारे 'वसुधैव कुटुंबकम' की धारणा के अनुकूल होता जिसमें विश्व मानवता के कल्याण की शिव कामना है किंतु आज वर्तमान रूप में वैश्वीकरण एक ऐसी धारणा है जिसका मूलाधार बाजार, बाजारवाद और उपभोक्तावाद है। पूरी दुनिया को अपने बाजार के रूप में परिवर्तित कर विश्व की सर्वोच्च- 'सुपर' शक्ति अमेरिका अपने रूप में ढालकर सांस्कृतिक दृष्टि से अपना बनाने, आर्थिक दृष्टि से न्यस्त स्वार्थों की पूर्ति के लिए पूरे विश्व को एक रंग में रंगने का संकल्प को कार्य रूप दे चुका है, पूरा विश्व उसके द्वारा परिकल्पित मॉल संस्कृति बन कर रह गया है। यह वैश्वीकरण एक प्रकार से पूरी दुनिया का अमेरिकीकरण है जो राष्ट्रों की स्थानिक संस्कृति जातीय चेतना को पूरी तरह लील कर अपने रंग में रंग डालने की बड़ी भारी सफल कूटनीति है जिसके कारण पूरा विश्व उसकी चपेट में आ चुका है।"[1]

अब इस तरह की भयानक वैश्वीकरण की स्थिति से किस प्रकार सामना किया जाए अथवा इसमें किस प्रकार विरोध दर्ज किया जाए इस विषय में चिंतन करना आवश्यक नजर आता है। जीवन को वैश्वीकरण ने गहरे रूप में प्रभावित, श्रेणीबद्ध और संकुचित किया है और हरेक इसकी चपेट में आ चुका है, परंतु कलाओं के माध्यम से इसका सीधा-सीधा विरोध किया जा रहा है। वैश्वीकरण के इस बाजारवाद के दौर में साहित्य और कला ने अपने को बचाने का भरपूर प्रयास किया है, किंतु इस भयानक वैश्वीकरण में कलाएं, संस्कृति, साहित्य और भाषा-बोली सबको लीलना भी तो प्रारंभ कर दिया है। साहित्यकार और साहित्य अपने-अपने स्तर, दायरे और


ISBN 978-81-940661-1-8
J. S. M. College, Alibag-Raigad (M.S.) 402 201

VOLUME - IX, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2020
**AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)**

# 15. The Critical Role Played by Health Care Professionals during COVID-19 and their Greatness :- Its Review

**Dr. Patil Jayashri S.**
Department of Chemistry, J. S. M. College, Alibag (M.S.), India.
**Dr. Shaikh Sajid F.**
Department of Chemistry, Anjuman Islam Janjira Degree College of Science, Murud- Janjira (M.S.), India.

**Abstract**

COVID-19 pandemic is a public health emergency which has result in substantial deaths and socio-economic disruption. Among the heroes who have emerged from this crisis are the Health Care Professionals who play a key role in the public health response to such crises, delivering direct patient care and risk of exposure to the infectious disease. Health Care Professionals are at the front line of any outbreak response and play critical role in improving access and quality health care for the population. They provide essential services that promote health, prevent diseases and deliver health care services to individuals, families and communities based on the primary health care approach. This systematic review emphasizes to describe the experiences of these health care professionals in the early stages of the COVID-19 pandemic outbreak.

**Keywords:-** Health Care Professionals, COVID-19, Pandemic, critical role.

## I) Introduction

Since December 2019, Coronavirus disease 2019 (COVID-19) caused by severe acute respiratory syndrome Coronavirus 2 (SARS-CoV-2) is rapidly spreading worldwide. The rapidly evolving epidemic has stressed the entire health-care system. In many countries thee fever clinics, respiratory and infectious disease units were overwhelmed by the increasing number of suspected and confirmed cases in the early stages of the outbreak of COVID-19. The general wards were quickly modified into isolation wards. The health care professionals who did not have infectious disease expertise stepped up to provide care for patients with COVID-19.



Scanned with CamScanner

# स्त्रीवाद
आणि
# १९७५ नंतरची मराठीतील आत्मचरित्रे

भरतकुमार भागाजी भालेराव

शब्दालय

ISSN : 2231 4377
वर्ष ३ रे - अंक : चौथा
जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च-२०१४
मूल्य : २०/-

# रक्तात पेटलेल्या अगणित सूर्यांनो

रक्तात पेटलेल्या **अगणित सूर्यांनो**
तुमची आयबहीण
आजही विटंबली जाते हाटाहाटातून
मवाल्यासारखे माजलेले
उन्मत्त निरो
आजही मेणबत्तीसारखी जाळतात माण्से चौकाचौकांतून
कोरभर भाकरी, पसाभर पाणी यांचा
अट्टाहास केलाच तर फिरवला जातो नांगर
आजही घरादारावरून
चिंतकातले हात सळसळलेच तर
छाटले जातात
आजही नगरानगरांतून
रक्तात पेटलेल्या अगणित सूर्यांनो
किती दिवस सोसायची ही घोर नाकेबंदी?
मरेपर्यंत राह्यचे का असेच युद्धकैदी?
ती पहा रे ती पहा, मातीची अस्मिता अभाळभर झालीय्
माझ्याही आत्म्याने झिंदाबादची गर्जना केलीय्
रक्तात पेटलेल्या अगणित सूर्यांनो
आता या शहराशहराला आग लावीत चला!

(गोलपीठा पृ. १३ वरून)

# १९९० नंतरचे मराठी साहित्यातील बदलते संदर्भ
## (दलित व स्त्रीवादी कथेच्या संदर्भात)

प्रा. भरतकुमार धाकेराव
भ्रमणध्वनी : ९४२२२५८३३०

के.एम.एम. कॉलेज व ...
अ/२०५, ... नगर, डॉ. दयाल रोड,
मुलुंड (प) मुंबई ४०००८०

१९९० नंतरच्या दलित आणि स्त्रीवादी कथेचा विचार करताना १९९० पूर्वीच्या या प्रवाहातील कथेचे स्वरूप पाहणे आवश्यक ठरते. या पार्श्वभूमीवरच १९९० नंतरच्या दलित स्त्रीवादी कथेमध्ये कोणती स्थित्यंतरे झाली ते स्पष्ट होईल.

१९९० पर्यंतच्या दलित कथेने शहरी झोपडपट्टी आणि ग्रामीण स्तरावरील दलित शोषित माणसांचे प्रश्न, समस्या मांडल्या. नागरी संस्कृतीने शहरी झोपडपट्टीतील माणसाला आपल्या संस्कृतीशी समरस होऊ दिले नाही. त्याच्या गरजा आणि प्रश्न या कडे नागरी संस्कृतीने दुर्लक्ष केले. नागरी संस्कृतीने बहिष्कृत केलेल्या स्थलांतरीत भूमिहीन दलित,शोषिताना शहरी संस्कृतीने सामावून न घेतल्याने आपली वेगळी 'झोपडपट्टी संस्कृती' उभी केली. झोपडपट्टीवासियांच्या भूक दारिद्रय यातून जिवंत राहण्यासाठीच्या संघर्षातून निर्माण झालेल्या विकृतीचे चित्रण दलित कथेने केले. ग्रामीण स्तरावरील चातुर्वर्ण्याधिष्ठित गावगाड्यामुळे दलितांच्या वाट्याला आलेल्या अस्पृश्यता, जातीयतेच्या करुण भीषण अनुभवाची मांडणी केली. दलित कथेने त्याच्या जीवनातील हे दुःख सामाजिक आणि आर्थिक विषमतेतून निर्माण झाले आहे. तसेच मानवी विकारवश, वर्चस्ववादी, स्वभावही दलितांच्या दुःखाला कारणीभूत आहे, त्याची कारणमीमांसा केली. ही अन्याय्य, जुलमी व्यवस्था आमूलाग्र बदलल्याशिवाय दलितांचे दुःख संपुष्टात येणार नाही. म्हणून या व्यवस्थेला दिलेला नकार व त्याविरुध्द पुकारलेला विद्रोह याचे चित्रण दलित कथेने केले. त्याचा परिणाम अर्थातच कथेच्या स्वरूपावर झाला. बंडखोर, विद्रोही, विज्ञाननिष्ठदृष्टिचा पुरस्कार करणारी पात्रे दलित कथेत आली. धर्मांतरानंतर दलित समाजात घडलेल्या बदलांचा, दलितांमधील अंतर्विरोध, ते नवबौध्द झाले म्हणून सवर्णांनी त्यांच्यावर केलेल्या अन्यायाचा प्रतिकार म्हणून दलित-सवर्ण संघर्ष कथेत आला. राजकीय हितसंबंधासाठी दलित चळवळी, संघटनांमधील फुटीरतेचा ग्रामीण आणि शहरीस्तरावर होत असलेल्या दूरगामी परिणामांचा दलित कथेने वेध घेतला. बाबुराव बागुलांच्या पिढीपासून ते अगदी अलीकडे अमिताभ, भिमसेन देठे, जयराज खुने पर्यंतच्या दलित कथाकारांपर्यंत वरील आशयांची अभिव्यक्ती करणारी आशयसूत्रे व पात्र चित्रणे आढळतात. उर्मिला पवार यांनी स्त्रीप्रश्न समूहजीवन, दलित कष्टकरी स्त्रीचे चित्रण केले.

दलित स्त्रीवादी कथेचा विचार करताना ती लघुकथा, दीर्घकथा अशा दोन प्रकारात लेखन होत असले, तरी ही कथा दीर्घ कथेकडे झुकण्याची वृत्ती दिसते. या दीर्घ कथेत अनुभवांची अनेकता, विस्तार, मोठा आवाका यांच्या परस्पर संबंधातून संघटन झालेले दिसते.

१९९० पर्यंतच्या स्त्रीवादी कथेने आतापर्यंत अस्पर्शित असलेल्या स्त्रीविशिष्ट दैहिक अनुभवांना आणि पुरुष प्रधान समाजव्यवस्थेमुळे सामाजिक सांस्कृतिक पातळीवर आलेल्या दुय्यमतेच्या वागणुकीला, दडपण आणि शोषणग्रस्त अनुभवांना आपल्या कथेचे केंद्र केले. १९९०पर्यंतच्या स्त्रियांच्या कथेचा विचार करताना घटनाप्रधान मनोरंजनवादी व मनोविश्लेषणात्मक कुटुब कथा या दोन प्रमुख धारा दिसतात १९७५ नंतर स्त्रीवादी विचार सरणीच्या प्रभावातून विषमतेवर आधारित पुरुषसत्ताक कुटुंब रचनेची निरीक्षणे आपल्या कथेतून मांडली. स्त्री स्वातंत्र्याची स्वतंत्रपणे व आत्मविश्वासाने आपली भूमिका मांडली. लग्नसंस्था, स्त्रीचे शरीरनिष्ठ अनुभव, सक्तीचे मातृत्व, स्त्री-पुरुष नात्यातील गुंतागुत, भावनिक गुंत्याचे प्रश्न, मानसिक संघर्ष वैवाहिक जीवनातील स्त्रीचे उध्वस्तपण, एकटेपण, घटस्फोटितांचे प्रश्न अशा कितीतरी गोष्टींची मांडणी 'स्त्री' ला केंद्रस्थानी ठेवून केली. सानिया, गौरी देशपांडे, प्रिया तेंडुलकर, मेघना पेठे इ. नी स्त्रीचे दुःख व्यथा मांडल्या. शोषण

■ आयएसएसएन : २२३१-४३७७
■ आरएनआय फॉर इंडिया नवी दिल्ली : २०१३/५२५६५
RNI Reg. No. MAHMAR/2013/52565
■ एसडीएम/पुणे/एसआर/६१/६/४/२०१३
■ वर्ष : ३, अंक : चौथा
■ अंक मूल्य - रु. १००/-

मराठी भाषा-वाङ्मय व संशोधन यासाठी असलेला मंच

त्रैमासिक

# सक्षम समीक्षा

■ जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च-२०१४

संपादक :
**प्रा. डॉ. शैलेश त्रिभुवन**
(एम.ए., एम.फिल. पीएच.डी., नेट-मराठी)
■
**मालक, मुद्रक, प्रकाशक :**
**सुनिता शैलेश त्रिभुवन**
(एम. ए. मराठी)
■
**प्रकाशन स्थळ :**
**शब्दाली प्रकाशन**
बी-५/२०६/दुसरा मजला, राहुलनिसर्ग,
अतुलनगर, वारजे-माळवाडी, पुणे - ५८
मो. : ८८०५४४२९३३
■
**टाईपसेटिंग**
शुभांगी एन्टरप्रायजेस, पुणे ४११ ०३०.
मो. : ९०४९६८२२५७
E-mail : shubhangient@gmail.com
■
**मुद्रित शोधन :**
विष्णू शिंदे (मो. : ९९२१०६२४१८)
■
**पत्र व्यवहाराचा पत्ता :**
**प्रा. डॉ. शैलेश विश्वनाथ त्रिभुवन**
बी-५/२०६/दुसरा मजला, राहुलनिसर्ग,
अतुलनगर, वारजे-माळवाडी, पुणे - ५८
मो. : ९९२२१३०१५७, ८८०५४४२९३३
dr.shailesh.tribhuwan@gmail.com

## अनुक्रमणिका

संपादकीय
१) बिनपटाची चौकट : एक यातनाघर । डॉ. गंगाधर पानतावणे । ३
२) राजहंसाची कथा । डॉ. नागनाथ कोत्तापल्ले । ५
३) अर्कचित्र : चौफेरतेचा सजग अनुभव । प्राचार्य रामदास डांगे । ११
४) अरुण कोलटकरांची कविता । प्रा. डॉ. चित्रा म्हाळस । १३
५) 'विरामचिन्हे' : एक सशक्त दलित कथा । प्रा. डॉ. प्रमोद पडवळ । १७
६) सर्वसामान्यांच्या दु:खनिरोधाची कविता । डॉ. मोतीराम कटारे । १९
७) कविता लिहून पूर्ण झाली। अनुवाद - प्रा. डॉ. शैलेश त्रिभुवन । २६
८) फ्राईड यांचा मनोविश्लेषणाचा सिद्धांत । प्रा. डॉ. एकनाथ ढोणे । ३१
९) मल्टिनॅशनल वॉर : परिवर्तनाचा ध्यास घेणाऱ्या कविता । प्रा. डॉ. सतीश मस्के । ३४
१०) प्रसारमाध्यमे आणि दलित-समाज । प्रा. उत्तमराव सूर्यवंशी । ३६
११) 'प्रेषित'मधील विज्ञान व वाङ्मयीन अभिव्यक्ती । प्रा. डॉ. लता मोरे । ३९
१२) समीक्षा व व्यंगचित्रे : एक चिंतन । श्री. रामचंद्र राशिनकर । ४३
१३) तुकाराममहाराजांच्या प्रभावळीतील संतांच्या रचनांतील लोकबंध । प्रा. देवीदास शेटे । ४६
१४) आंबेडकरवादी साहित्य -: एक आकलन । प्रा. डॉ. मल्हारी मसलखांब । ५८
१५) १९९० नंतरचे मराठी साहित्यातील बदलते संदर्भ । प्रा. भरतकुमार भालेराव । ६१
१६) नीरजा : स्त्रीचे प्राक्तन मांडणाऱ्या कवयित्री । प्रा. डॉ. कीर्ती मुळीक । ६८
१७) वर्तमान शिक्षणव्यवस्थेचा पंचनामा : 'वॉन्टेड' । प्रा. डॉ. संभाजी शिंदे । ७१
१८) क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले : जीवनपट व कार्य । प्रा. रवींद्र रामचंद्र शिंदे । ७५
१९) ओळीनंतरच्या ओळी । प्रा. विरेंद्र घरडे । ७९
२०) समकालीन स्त्रीवेदनेचे वास्तववादी आविष्करण । प्रा. केदार काळवणे । ८१
२१) संत कवयित्रींची प्रयोगशीलता व पृथगात्मकता । प्रा. डॉ. उज्ज्वला जाधव । ८६
२२) आधुनिकतेची भारतीय परंपरा । प्रा. डॉ. शशिकांत साळवे । ८९
२३) साठोत्तरी ग्रामीण कादंबरीचे योगदान । प्रा. डॉ. गजानन लोंढे । ९१
२४) दलित कवितेचे सामाजिक आशयसूत्र । प्रा. डॉ. प्रफुल्ल गवई । ९३
**कविता : डॉ. रावसाहेब कसबे, धर्मराज निमसरकर, रमजान मुल्ला, प्रा. चंद्रमणी भालेराव**

एप्रिल-मे-जून २०१४ हा अंक 'पद्मश्री नामदेव ढसाळ साहित्य विशेषांक' असणार आहे. लेखकांनी / अभ्यासकांनी १ मार्चपर्यंत फक्त सदर विषयासंबंधीच आपले लेख पाठवावेत. इतर लेख छापले जाणार नाहीत, याची कृपया नोंद घ्यावी.

■ **वर्गणी : बँक ऑफ महाराष्ट्र, पुणे 'शब्दाली प्रकाशन' (खाते क्र. : ६००५८१३८४३५) या खात्यावर जमा करून सदर पावती शब्दाली प्रकाशन, बी-५/२०६/दुसरा मजला, राहुलनिसर्ग, अतुलनगर, वारजे-माळवाडी, पुणे - ४११ ०५८ या पत्त्यावर पाठवावी. ■ वार्षिक वर्गणी : (व्यक्ती) - रु. २५०/-, (संस्था) - रु. ३००/- ■ पाच वर्षे वर्गणी : (व्यक्ती) - रु. १,२५०/-, (संस्था) - रु. १,५००/-**
■ **२०१४-१५ मध्ये : जा.फे.मा./ए.मे.जू./जु.ऑ.स./ऑ.नो.डि. इत्यादी चार अंक प्रकाशित होतील.**

*अंकातील लेखक, कवी व समीक्षक यांच्या विचारांशी मालक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक सहमत असतीलच असे नाही.*

# नाटक

## विवेचना और दृष्टि

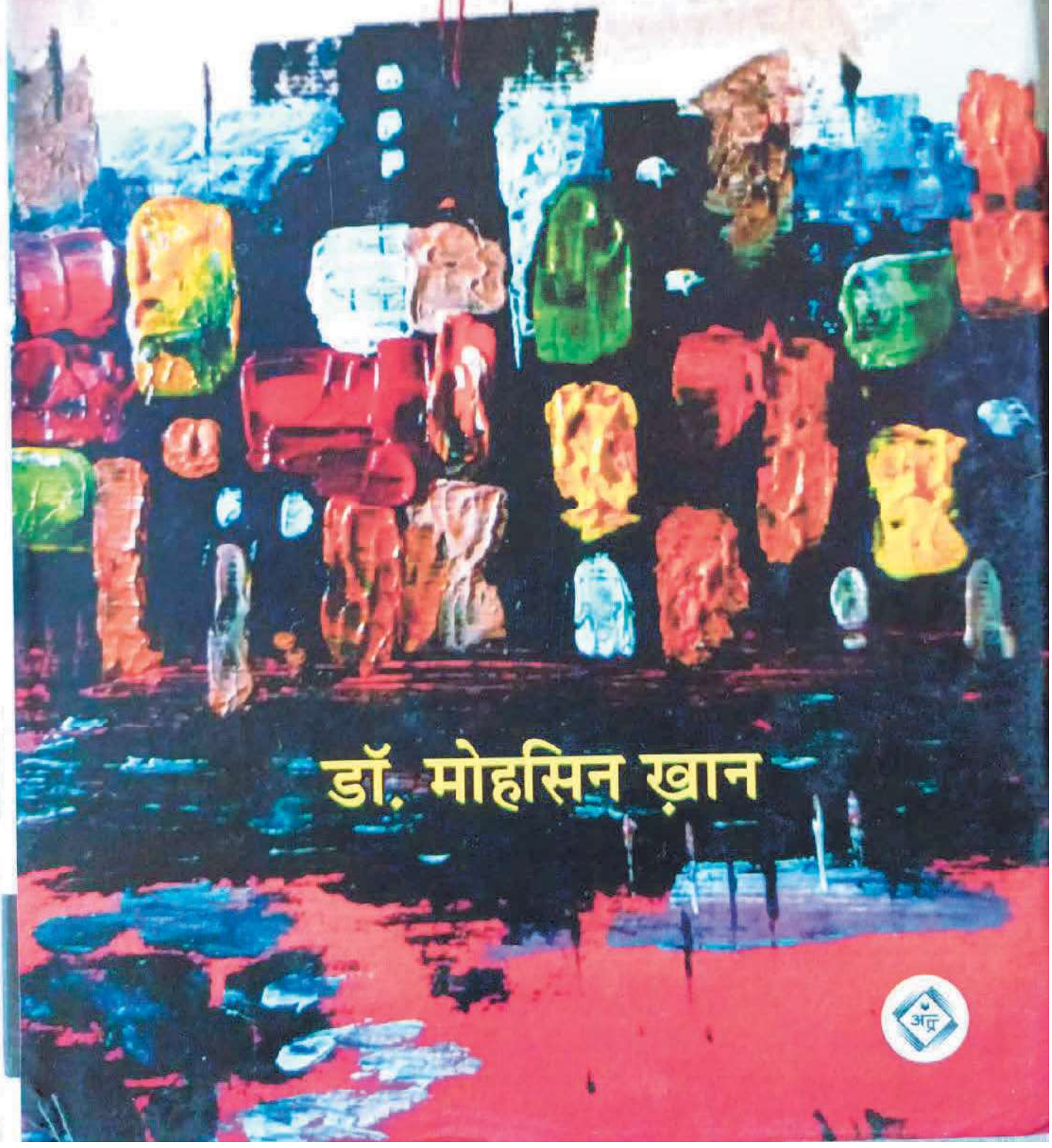

डॉ. मोहसिन ख़ान

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

**I.S.B.N. : 978-93-90265-24-4**

पुस्तक : नाटक : विवेचना और दृष्टि
लेखक : डॉ. मोहसिन ख़ान
संस्करण : प्रथम, सन् 2021
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
मूल्य : ₹ 450.00 मात्र
प्रकाशक : अमन प्रकाशन
104-A/80-C रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.)
मो. : 08090453647, 9044344050
ऑफिस : 0512-3590496
मुद्रक : आर.बी. ऑफसेट, नौबस्ता, कानपुर
आवरण : के. रवीन्द्र
शब्द सज्जा : अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

**NATAK : VIVECHANA AUR DRISHTI**
**by – *Dr. Mohsin Khan***
*Price : Rs.Four Hundred Fifty Only*

# Protest Literature

## A Critical Anthology

Edited by
Shuddhodhan Kamble
Gautam Satdive

Scanned by CamScanner

# Protest Literature : A Critical Anthology

Edited by
**Shuddhodhan Kamble**
**Gautam Satdive**

Vidhan Publishing Company
Amravati

Scanned by CamScanner

**Published by**
© **Vidhan Publishing Company**
Nalanda Colony, Bhimtekadi,
Amravati. 444 606
Mo. 9284733513
Email : vidhanpublishing@gmail.com

# Protest Literature : A Critical Anthology

**First Edition**
May, 2021

**ISBN -**
978-81-950858-0-4

**Price :**
Rs. 750/-

**Printer and Typist**
Atharv Graphics
Amravati, Maharashtra

**Cover Design**
Prof. Manish Chopde
Amravati

**Disclaimer**
Concerned authors are solely responsible for their views, opinions, policies, copyright infringement, legal action, penalty or loss of any kind regarding their articles. Neither the publisher nor the editors will be responsible for any penalty or loss of any kind if claimed in future. Contributing authors have no right to demand any royalty amount for their articles.

Scanned by CamScanner

# Contents


| | | |
|---|---|---|
| | Editors' Note | i |
| | Preface | iii |
| 1 | Dalit Women's Voices for Justice and Rights<br>**Dr. M. B. Gaijan** | 1 |
| 2 | Social Issues in Datta Bhagat's *Routes and Escape Routes*<br>**Dr. Ashish Gupta** | 13 |
| 3 | The Plights and Persecutions of the Dalits and the Deserted in The Plays of Bhikhari Thakur : A Critical Exploration<br>**Dr. Amar Nath Prasad** | 22 |
| 4 | A Study of the Anti – Human Practices in Brahminism and a False Polarization in India<br>**Dr. Grishma Khobragade** | 34 |
| 5 | Protest against Disability Discrimination in *Barnaby Rudges - A Tale of Riots of Eighty*<br>**Dr. Manohar S. Vaswani** | 44 |
| 6 | Atmaram Kaniram Rathod's *Tanda:* An Epoch - Making Work in Tribal Literature<br>**Dr. Vishnu M. Chavan** | 53 |
| 7 | The Theme of Universality in the Works of Shankarrao Kharat<br>Jaydeo M. Wankhede | 58 |


Scanned by CamScanner

8 Defending a Country against an Autocrat : Llosa's *The Feast of the Goat* as a Novel of Protest
**Pratima Agnhiotri**

9 From Meek Submission to Stormy Rebellion : An Exploration of the Thematic Concerns in the Select Dalit Short Stories
**Kapil Mahadeo Kulkarni**

10 Reconciliation and Emancipation as a Form of Protest in the Select Novels of Chimamanda Adichie
**N. Rema**

11 Annabhau Sathe : A Pioneer of the Dalit Short Story
**Dr. Ravi Prakash Chapke**

12 Class Agitation in Sharankumar Limbale's Autobiography *The Outcaste*
**Dr. Anandi Sadashiv Kamble**

13 Socio – Economic and Political Protest in Mahaswetha Devi's *Draupadi*
**M. Malini**

14 "Making a little sacrifice you are contributing to the nation at large"– Analysis of Political Policy in Mo Yan's *Frog*
**Sarah Helan Sathya A.**

15 Gender Disparity in Mahesh Dattani's *Seven Steps Around the Fire*
**Dr. Siddhartha B. Sawant**

16 Protest of Dalit Children in Bama's *Karukku*
**N. Ramesh Kumar**
**Dr. S. Balasundari**

17 Whiteness is not a Solace with Reference to Toni Morrison's *The Bluest Eye*

Scanned by CamScanner

9

# From Meek Submission to Stormy Rebellion: An Exploration of the Thematic Concerns in the Select Dalit Short Stories

Kapil Mahadeo Kulkarni

Literature of the marginalized classes has been gaining wide acclaim and appreciation throughout the world. It is hailed for the pure authenticity of the lived experiences of the writers. The minds silenced for ages have come up now with voices of protest and rebellion against the hegemonic structures in the society which have kept them in shackles for eons. In India a large section of the society has been treated in a very inhuman manner for centuries. The evil of the caste system in the prominent religion in the country has led to the inescapable trap of slavery of the people belonging to the lower rungs of the ladder of this hierarchy. The caste system is so deeply rooted in the society that a person is not judged by his qualities and abilities but by his caste.

In the 20th century the Dalit movement led by Dr. B. R. Ambedkar brought about the awakening among these Dalit people in India. The introduction of education set them thinking about their condition and the reasons for it. Dalit writers started to speak about their experiences and began to raise certain issues leading to

Scanned by CamScanner

# THE SCIENCE OF ENERGY

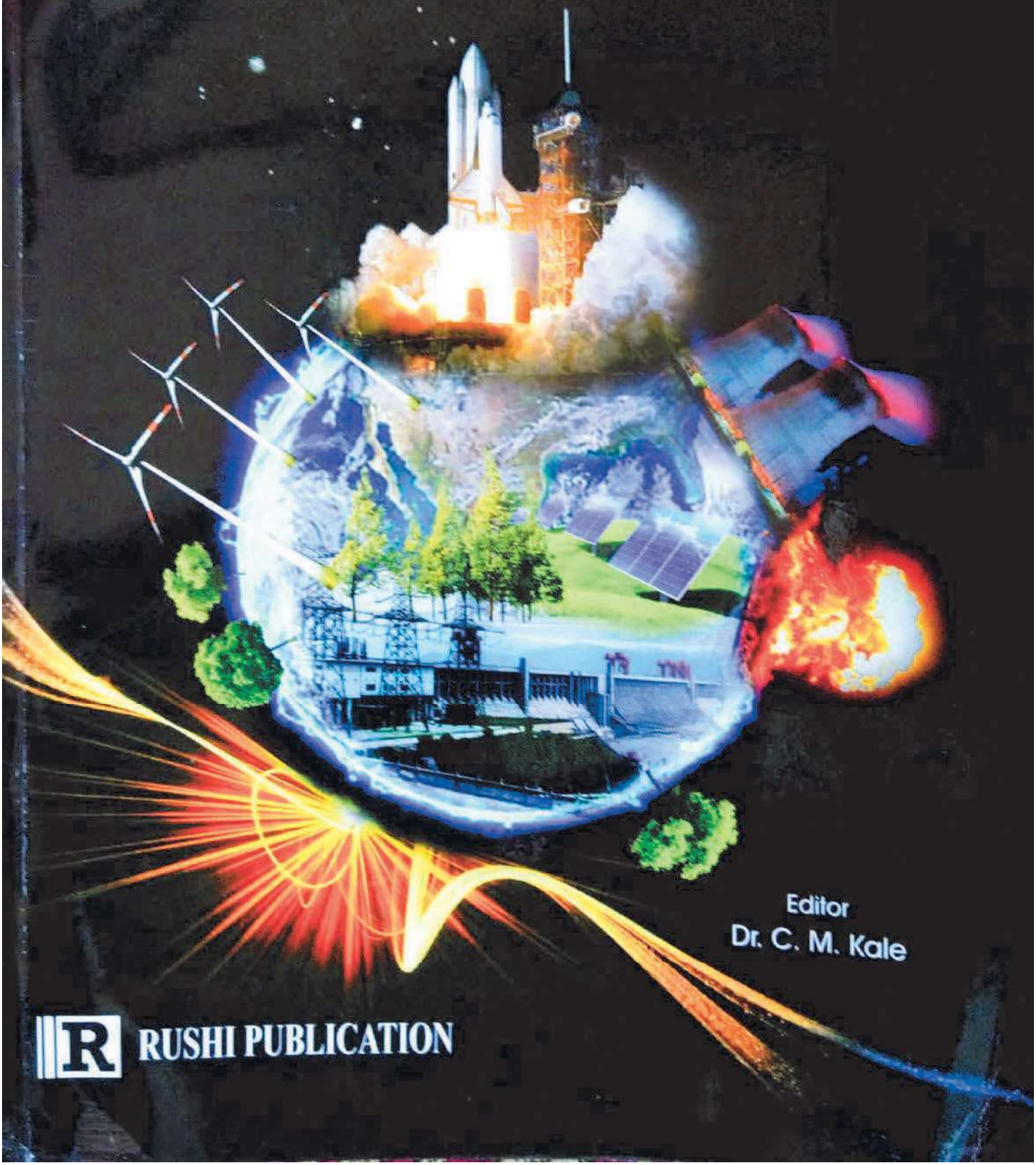

Editor
Dr. C. M. Kale

RUSHI PUBLICATION

Scanned by CamScanner

# THE SCIENCE OF ENERGY


• EDITOR •

**Dr. C. M. Kale**

Assistant Professor and Head

**DEPARTMENT OF PHYSICS**

**Indraraj Arts, Commerce and Science College, Sillod**

Dist. Aurangabad (M.S.) INDIA



**RUSHI PUBLICATION**





Scanned by CamScanner

# THE SCIENCE OF ENERGY


| | | |
|---|---|---|
| **ISBN No.** | : | **978-81-929628-3-2** |
| **Publication** | : | **Rushi Publication**<br>**Rgd. No.:**1641500310731143 |
| **Publisher** | : | **Dr. Surekha S. Lakkas**<br>B-115, Gajanan Colony, Gharkheda,<br>Aurangabad. (M. S.) INDIA, 431005<br>✆: +91 9975080017<br>e-mail-drsurekhakale@gmail.com |



**Copyright © 2020 :** All right reserved with authors.

*No part of this book may be reproduced or copied in any form or by any means graphic, electronic or mechanical, including but not limited to photocopying, recording, taping, Webdistribution, information networks, or information storage and retrieval systems-without the written permission of copyright holder and author(s). Breach of this condition is liable for legal action. All disputes are subject to Aurangabad jurisdiction only.*



| | | |
|---|---|---|
| **Editor** | : | **Dr. C. M. Kale**<br>Assistant Professor and Head<br>Department of Physics, Indraraj Arts, Commerce and Science College, Sillod, Dist. Aurangabad (M.S.) INDIA |
| **Edition** | : | First Edition (July 5, 2020), Gurupournima |
| **Publication date** | : | **5 July 2020** |
| **Typesetter** | : | Ajay Computer and Multiservices, Sillod |
| **Cover design** | : | Shravani Graphics, Aurangabad |
| **Total pages** | : | **178+2** |
| **Distributor** | : | Mr. Ajay Sonawane |
| **Price** | : | Rs.1000/- |

ISBN 978-81-929628-3-2

978-81-929628-3-2


*Note: The information written by every author in this book is his own manuscript. It has no concern at all with the publisher or the editorial board.*



Scanned by CamScanner

# INDEX


| Chapter Number | Title and Author of Chapter | Page Number |
|---|---|---|
| 1. | **INTRODUCTION TO ENERGY**<br>***Dr. Chandrashekhar M. Kale***<br>*Vice-Pricipal and Head, Department of Physics*<br>*Indraraj Arts, Commerce and Science College, Sillod. Dist. Aurangabad* | 1-10 |
| 2. | **TYPES OF SOURCES OF ENERGY**<br>***Prof. Ramesh T. Ubale***<br>*Assistant Professor, Department of Physics*<br>*Siddharth Arts, Commerce and Science College, Jafrabad. Dist. Jalna* | 11-18 |
| 3. | **WIND ENERGY**<br>***Dr. Raghunath G. Vidhate***<br>*Head, Department of Physics,*<br>*Anandrao Dhonde Alias Babaji Arts, Commerce and Science Mahavidyalaya, Kada. Tq. Ashti, Dist. Beed* | 19-25 |
| 4. | **SOLAR ENERGY**<br>***Dr. Bhausaheb H. Devmunde***<br>*Assistant Professor, Department of Physics*<br>*Vivekanand College, Aurangabad* | 26-32 |
| 5. | **NUCLEAR ENERGY**<br>***Dr. Pallavi B. Nalle***<br>*Assistant Professor, Department of Physics*<br>*Shri Shivaji Science and Arts College, Chikhli, Dist. Buldana* | 33-39 |
| 6. | **ELECTRICAL ENERGY**<br>***Dr. Jawaharlal M. Bhandari***<br>*Vice-Principal and Head, Department of Physics*<br>*Shri Amolak Jain Vidya Prasarak Mandals Smt. S. K. Gandhi Arts, Amolak Science and P. H. Gandhi Commerce College Kada, Dist. Beed* | 40-46 |
| 7. | **CHEMICAL ENERGY**<br>***Mr. Jaysing M. Dinore***<br>*Assistant Professor and Head, Department of Chemistry*<br>*Indraraj Arts, Commerce and Science College, Sillod, Dist. Aurangabad* | 47-51 |
| 8. | **HYDROGEN ENERGY**<br>***Dr. Siddharth P. Kamble***<br>*Assistant Professor, Department of Physics*<br>*C.T. Bora College Shirur (Ghodnadi), Dist. Pune* | 52-57 |
| 9. | **MECHANICAL ENERGY**<br>***Dr. Vinod K, Barote***<br>*Assistant Professor and Head, Department of Physics*<br>*Sant Dnyneshwar Mahavidyalya, Soegaon. Dist. Aurangabad* | 58-63 |
| 10. | **LIGHT ENERGY**<br>***Dr. Pankaj P. Khirade***<br>*Assistant Professor, Department of Physics*<br>*Shri Shivaji Science College, Amravati* | 64-70 |
| 11. | **HEAT ENERGY**<br>***Dr. Suchita V. Deshmukh***<br>*Assistant Professor, Department of Physics*<br>*Indraraj Arts, Commerce and Science College, Sillod. Dist. Aurangabad* | 71-78 |




Scanned by CamScanner

12. **SOUND ENERGY** 79-85
*Dr. Ramdas B. Kavade*
*Assistant Professor and Head, Department of Physics*
*Bhagwan Mahavidyalaya, Ashti. Dist. Beed*

13. **ELASTIC ENERGY** 86-92
*Dr. Santosh D. More*
*Assistant Professor and Head, Department of Physics*
*Deogiri College, Aurangabad*

14. **GRAVITATIONAL ENERGY** 93-97
*Dr. Santosh S. Deshpande*
Assistant Professor and Head, Department of Physics
Rashtramata Indira Gandhi College. Jalna

15. **GEOTHERMAL ENERGY** 98-104
*Mr. Ravindra N. Chikhale*
*Assistant Professor, Department of Physics*
*J. S. M. College, Alibag, Dist. Raigad*

16. **HYDROENERGY** 105-109
*Dr. Mahesh K. Babrekar*
*Assistant Professor, Department of Physics*
*Indraraj Arts, Commerce and Science College, Sillod. Dist. Aurangabad*

17. **TIDAL ENERGY** 110-115
*Dr. Mrs. Surekha B. Jaiswal*
*Assistant Professor and Head, Department of Physics*
*Moreshwar Arts, Comm. and Science College, Bhokardan. Dist. Jalna*

18. **OCEAN ENERGY** 116-121
*Dr. Shivanand V. Kshirsagar*
*Vice-Pricipal and Head, Department of Physics*
*Mrs. Kesharbai Sonajirao Kshirsagar Alias kaku Arts, Science and Commerce College, Beed*

19. **BIOMASS ENERGY** 122-127
*Dr. Raosaheb K. Barote*
*Vice-Pricipal and Head, Department of Zoology*
*Sant Dnyneshwar Mahavidyalya, Soegaon. Dist. Aurangabad*

20. **ENERGY FROM FOSSIL FUEL** 128-133
*Dr. Kakasaheb V. Badar*
*Assistant Professor, Department of Botany*
*Yeshwantrao Chavan College Sillod, Dist. Aurangabad*

21. **ELECTROSTATIC ENERGY** 134-139
*Dr. Ram S. Barkule*
*Assistant Professor, Department of Physics*
*Sundarrao More College of Arts, Commerce, and Science, Poladpur. Dist. Raigad*

22. **ELECTROMAGNETIC ENERGY** 140-144
*Dr. Vishwanath D. Mote*
*Assistant Professor, Department of Physics*
*Dayanand Science College, Latur*

23. **ENERGY FROM FOOD** 145-151
*Mr. Rushi C. Kale*
*Student, Class-XII*
*Shivchhatrapati College, CIDCO, Aurangabad*

24. **COSMIC ENERGY** 152-155
*Dr. Satish R. Bainade*
*Junior College Teacher*
*Rajeev Gandhi Military School and Jr. College Kolwad, Buldana*




Scanned by CamScanner

ISBN: 978-81-929628-3-2

CHAPTER.15

# GEOTHERMAL ENERGY

## 15.1. INTRODUCTION

Geothermal is a renewable source of energy in the form of heat at the interior of the Earth. The detailed study of geothermal phenomenon begins in the 19th century. The interior of the earth consists of different physical, chemical conditions, and composition. Depends on physical, chemical conditions, and composition the energy is released in the form of heat from the interior of the earth called geothermal energy. The temperature (heat) is increased with respect depth of the earth. Even in the crust part of the earth heat is present in large amounts in inexhaustible form. The heat is dissipated from the interior of the earth and transfer toward the surface of the earth.

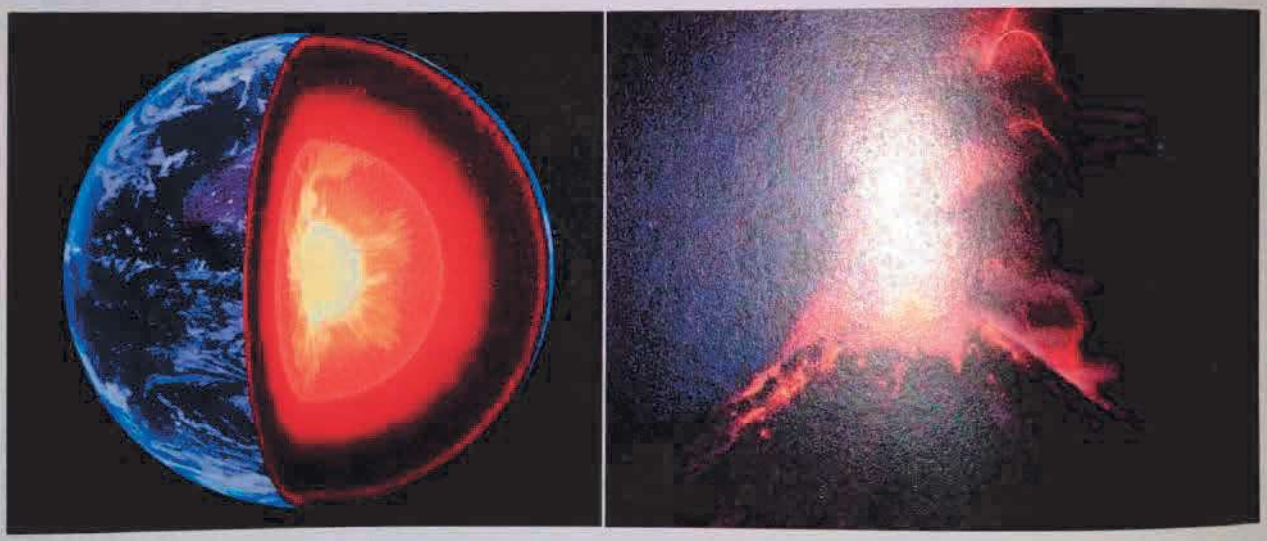

The temperature of the earth increases concerning depth therefore there is a heat gradient (geothermal gradient) that exists between different layers of the earth (Average $30^0$C/Km) in the lithosphere. There are several places in the interior of the earth where the geothermal gradient in above-average value. In most of those places, the rocks are found to be in the molten form called 'magma'. When this 'magma' erupted on earth's surface it gets solidify by cooling and releasing energy in the form of heat.

The heat can be extracted from hot spots (where magma exist) using heat carrier and can be utilized for different applications. The heat carrier transfers heat from beneath (interior) of the earth to the surface of the earth. The heat is transfer through heat carrier by



Scanned by CamScanner